पाठ योजना

छात्राध्यापक अनुक्रमांक –9467867197 | कक्षा –नौवीं

विषय – संगीत गायन/वादन | समय–40 मिनट

उपविषय– राग यमन का शास्त्रीय परिचय | तिथि – 17/03/2023

पाठ योजना के क्रम	पाठ योजना के क्रम का विवरण
अधिगम प्रतिफल : **Learning Outcomes :**	अधिगमकर्ता संगीत गायन में कल्याण थाट से उत्पन्न राग यमन के शास्त्रीय परिचय में थाट, जाति, वादी–सवादी–विवादी–अनुवादी स्वर और आरोह–अवरोह और पकड़ के स्वरों को जानेगा तथा संगीत के माध्यम से अंदर छिपी सांगीतिक प्रतिभा को तराशने का प्रयास करेगा। इसके अतिरिक्त लयबद्ध गतिविधियों का प्रदर्शन और अनुकरण करेगा और राग के आवश्यक सिद्धांतों से परिचित होगा कि किसी एक राग के शास्त्रीय परिचय तथा स्वरों के माध्यम से अन्य रागों के शास्त्रीय परिचय तथा स्वरों को कैसे बोला, लिखा व गाया जा सकता है।
अधिगम उद्धेश्य : **Learning Objectives:**	अधिगमकर्ता को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते है और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है, कि विद्यार्थियों की संगीत के प्रति रुची उत्पन्न करना, उनको शास्त्रीय संगीत सीखने के लिए प्रेरित करना तथा उन्हे संगीत शास्त्र का ज्ञान प्रदान करना। राग यमन के शास्त्रीय परिचय उदाहरण से पाठ्यक्रम के अन्य रागों के शास्त्रीय परिचय को याद, लिखना व गायन की जानकारी देना।
अधिगम सामग्री : **Learning Resources :**	उपविषय सम्बधिंत संगीत कक्ष एवं उसमें संगीत सम्बन्धी उपकरण जैसे श्यामपट/स्मार्ट बोर्ड, चॉक, झाडन, चार्ट इत्यादी का प्रयोग किया जायेगा।
पूर्व ज्ञान अनुमान : **Previous Knowledge Essume:**	छात्रअध्यापक को ज्ञान होगा कि बच्चों को पहले संगीत–शास्त्र का कुछ ज्ञान है तथा उन्हे अलंकारों का हारमोनियम पर बजाने का अभ्यास भी है।
पूर्व–ज्ञान परीक्षण : **Previous Knowledge Test :**	विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति की जांच करने तथा नवीन ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करने हेतु छात्राध्यापक छात्रों से पूर्व ज्ञान सम्बन्धी कुछ प्रश्न पूछेगा। 1. स्वर किसे कहते है? 2. तीव्र स्वर की परिभाषा बताओ? 3. स्वर के कितने प्रकार है? 4. थाट किसे कहते है? 5. थाट कल्याण से उत्पन्न किसी एक राग का नाम बतांए?
उद्धेश्यकथन एवं विषय/उपविषय की घोषणा : **Objetive statement:**	अन्तिम प्रश्नों का उत्तर असन्तोषजनक पाकर छात्राध्यापक विषय की घोषणा करेगा कि आज थाट कल्याण से उत्पन्न राग यमन के शास्त्रीय परिचय को लिखना, बोलना और गायन सीखाया जायेगा।

प्रस्तुतीकरण : Presentation **:**	प्रस्तुतीकरण को सुविधा के लिए सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक दो पक्षों में विभाजित किया जायेगा।

विषय सामग्री	पाठ्यविधि	छात्रों का कार्य	श्यामपट् कार्य
राग–यमन	छात्राध्यापक विद्यार्थियों को कॉपियां खोलने तथा उसमें मुख्य बातें लिखने का आदेश देगा। पूर्व ज्ञान परीक्षण में पूछा गया प्रश्न, थाट की परिभाषा का स्पष्टीकरण करते हुए छात्राध्यापक पूछेगा–राग की उत्पत्ति किससे होती है? उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में कुल कितने थाट माने जाते है?	आदेशानुसार विद्यार्थी कापियां खोलेंगे। छात्र बताने का प्रयत्न करेंगे कि राग की उत्पत्ति थाट से होती है। विद्यार्थी दस थाटों के नाम बताएंगे।	राग–यमन नाद से स्वर, स्वर से सप्तक, सप्तक से थाट और थाट से राग उत्पन्न होते है।
थाट कल्याण	राग यमन की उत्पत्ति थाट कल्याण से हुई है। छात्राध्यापक यह भी बतायेगा कि राग यमन को कल्याण राग भी कहा जाता है। विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान के आधार पर मुख्य जातियों तथा उनसे बनी अन्य जातियों के नाम पूछे जायेंगे।	विद्यार्थी अपनी कापियों में नोट करेंगे। छात्र मुख्य जातियों के नाम तथा उनका विवरण बताने की चेष्टा करेंगे।	राग यमन का थाट कल्याण है सम्पूर्ण जाति–सात स्वर षाड़व जाति– छह स्वर ओड़व जाति– पांच स्वर
वर्जित स्वर	वर्जित स्वर किसे कहते है?	छात्र बताएगें कि जो स्वर राग में न लगता हो।	वर्जित स्वर – कोई नहीं
राग यमन की जाति	छात्राध्यापक बतायेगा कि राग यमन में कोई भी स्वर वर्जित नही है। इसलिए इसकी जाति सम्पूर्ण है।		सम्पूर्ण जाति
वादी–स्वर	राजा का चित्र दिखाते हुए छात्राध्यापक पूछेगा कि यह किस की तस्वीर है? छात्राध्यापक पूछेगा कि राग में किस स्वर को राजा की उपमा दी जाती है। राग यमन में सबसे अधिक प्रयूक्त होने वाला स्वर गंधार है जिससे इसको वादी स्वर मानते है।	छात्र बतांएगे कि वे इसमें राजा का चित्र देख रहे है। विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर बताएंगे कि वादी स्वर को राजा की उपमा दी जाती है, क्योंकि यह सबसे अधिक प्रयुक्त होता है।	वादी– गंधार
संवादी स्वर	संवादी स्वर की उपमा किससे की जाती है? छात्राध्यापक बतायेगा कि राग यमन में संवादी स्वर निषाद माना जाता है जो वादी से कम और अन्य स्वरों से अधिक बार राग यमन में प्रयुक्त होता है।	छात्र बतायेंगे कि मन्त्री से संवादी स्वर की उपमा की जाती है, क्योंकि यह वादी स्वर से कम और अन्य स्वरों से अधिक राग यमन में प्रयुक्त होता है।	स्वांदी–निषाद

विषय सामग्री	पाठ्यविधि	छात्रों का कार्य	श्यामपट् कार्य
गायन/वादन समय–	छात्राध्यापक पूछेगा कि राग को उनके निर्धारित समय पर गाने बजाने से क्या होता है? छात्राध्यापक स्वयं बतायेगा कि ऐसा करने से राग की रंजकता बढ़ती है। राग यमन का गायन/वादन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।	विद्यार्थी उतर देने की कोशिश करेंगे तथा अपनी कापियों पर इन मुख्य बातों को लिखते जाएंगे।	गायन/वादन समय रात्रि का प्रथम प्रहर।
आरोह– **अवरोह–**	छात्राध्यापक नीचे से ऊपर तथा ऊपर से नीचे स्वरों के क्रम को चार्ट पर दर्शाते हुए पूछेगा कि स्वरों के ऐसे क्रम को क्या कहते है। छात्राध्यापक स्वयं भी बतायेगा कि नीचे से ऊपर क्रम को आरोह तथा ऊपर से नीचे के क्रम को अवरोह कहते है। राग यमन का आरोहावरोह श्यामपट् पर लिखा जाएगा। यह भी स्पष्ट किया जायेगा कि इस राग का चलन ऐसा है कि यह सा के स्थान पर मंद्र नि़ से शुरु होता है। आरोह में पंचम को प्रायः छोड़ दिया जाता है। म स्वर तीव्र लगता है तथा बाकी सभी स्वर शुद्ध लगते है। तीव्र स्वर का चिन्ह पूछा जायेगा।	चार्ट देखते हुए छात्र अपने अंलकारो के अभ्यास के आधार पर बताने की चेष्टा करेंगे। **आरोह–** **अवरोह–** छात्र अपनी कापियों पर राग यमन का आरोहावरोह लिखेंगे। तीव्र म का चिन्ह भी स्पष्ट करेंगे। विद्यार्थियों को तीव्र स्वर के चिन्ह की जानकारी है कि स्वर के ऊपर छोटी सी रेखा लगाई जाती है। छात्राध्यापक के प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न करेंगे तथा बताए गए उतरों को कापियों पर लिखेंगे।	आरोह–नि़रेगमधनिसां। अवरोह–सांनिधपमगरेनि़रेसा।
पकड़ के स्वर	छात्राध्यापक पूछेगा कि स्वरों का वह छोटे से छोटा स्वर समूह जिससे किसी राग की पहचान होती है उसे क्या कहते है? राग में लगने वाले मुख्य स्वर समूह को मुख्यांग व पकड़ कहते है। छात्राध्यापक श्यामपट् पर पकड़ लिखेगा साथ–साथ विद्यार्थियों की कापियों का निरीक्षण करेगा।	छात्र बताने का प्रयत्न करते है लेकिन असतोंषजनक जवाब पाने पर छात्राध्यापक स्वयं उनको इस बारे स्पष्ट करेंगें।	पकड़–पमगरे, नि़रेसा।

क्रियात्मक पक्ष–

विषय सामग्री	पाठ्यविधि	छात्रों का कार्य	श्यामपट् कार्य/आवश्यक सामग्री का प्रयोग
नि॒ रे ग म॑ ध नि सां सां नि ध प, म॑ ग रे, नि॒ रे सा नि॒ रे ग रे, नि॒ रे सा प म॑ ग, रे नि॒ रे सा	सैद्धान्तिक ज्ञान की जानकारी के उपरान्त छात्राध्यापक क्रियात्मक रुप से राग का आरोहावरोह, पकड़ कराएगें। वह सर्वप्रथम हारमोनियम की सहायता से षड़ज लगाते हुए सारा आरोहावरोह स्वयं चार पांच बार गा कर सुनाएगे ताकि राग का स्वरुप बन जाए। फिर ''म'' स्वर तीव्र कर शुद्ध स्वर से अन्तर बताया जायेगा। छात्राध्यापक पहले शुद्ध म फिर तीव्र म गा कर उनका अन्तर स्पष्ट करेगा। छात्रों से भी ऐसा करने को कहा जायेगा। पहले आरोह के स्वरों को खण्डों में विभाजित करके सिखाया जायेगा। दो–तीन बार गाने के बाद ध नि सां भी जोड़ दिया जाएगा। आरोह सिखाने के बाद अवरोह को भी दो खण्डों में विभाजित कर सिखाया जाएगा। छात्राध्यापक पहले सामूहिक रुप से गवाएगा। फिर व्यक्तिगत रुप से गााने को कहा जाएगा। उनकी त्रुटियों का निवारण करने के लिए छात्राध्यापक उनके साथ भी गाएगा। इसी प्रकार पकड़ को टुकड़ो में विभाजित कर कराया जाएगा। फिर पकड़ पूर्ण रुप से गाकर सुनाई जाएगी। अभ्यास कराते हुए 'म' पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। घण्टे के शेष समय में आरोहावरोह व पकड़ का अभ्यास कराया जाएगा।	छात्राध्यापक के आदर्श गायन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। छात्राध्यापक द्वारा बताए गए शुद्ध तथा तीव्र म का गा कर अनुकरण करेंगे। छात्र आरोह के प्रथम खण्ड को सामूहिक रुप से गाएगा व सारे आरोह को बार–बार गाएगा। आरोह की भांति ही अवरोह के पहले खण्ड को गाने के बाद दूसरे खण्ड को गाएगा। अन्त में पूरे अवरोह को छात्र एक साथ गायेंगे। विद्यार्थी व्यक्तिगत रुप से भी सुनाएंगे तथा अपनी त्रुटियां दूर करेंगे। अध्यापक का अनुकरण करते हुए विद्यार्थी पकड़ को भी टुकड़ों में गाएंगे फिर पूर्ण रुप से पकड़ गा कर अभ्यास करेंगे।	हारमोनियम/तानपूरे के साथ अभ्यास करवाया जायेगा

पुनरावृतिः **Recurrence**	पाठ की जांच के लिए छात्राध्यापक राग यमन के शास्त्रीय परिचय में बताये गए उत्तरों को व्यक्तिगत रुप से सुनेगा तथा कुछेक प्रश्न पूछेगा– 1. राग यमन का गायन–वादन समय क्या है? 2. राग यमन में कौन–कौन से स्वर लगते है? 3. राग यमन के आरोह–अवरोह तथा पकड़ के स्वर बताएं?
गृहकार्यः Homework :	सभी छात्र घर से राग यमन का शास्त्रीय परिचय याद करके आयेगें तथा हारमोनियम पर राग यमन के आरोह–अवरोह और पकड़ के स्वरों का अभ्यास करके आयेगें।